INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 4 | MAY – 2024

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की 'नासमझ' (कहानी संग्रह) की कहानियों में सामाजिक चेतना का अध्ययन

जय प्रकाश साकेत
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. लता द्विवेदी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

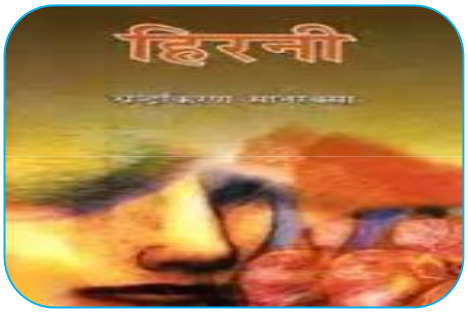

'नासमझ' चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की एक कहानी संग्रह है जो सामाजिक चेतना और मानवीय अनुभवों पर आधारित है। इस संग्रह में कई कहानियाँ हैं जो विभिन्न सामाजिक मुद्दों, जैसे समाज में विभिन्न वर्गों के लोगों के बीच संबंध, समाजिक न्याय, और सामाजिक बदलाव को छूती हैं। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में लोगों के बीच सामाजिक विभाजन का विवेचन किया गया है, जैसे कि जाति, वर्ग, धर्म आदि। यह विभाजन कैसे समाज के रूप में परिणामस्वरूप संबंधों और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव डालता है, इसे दिखाया गया है। कहानियों में मानवीय संबंधों को विशेष ध्यान दिया गया है। प्रेम, मित्रता, परिवार आदि के संबंधों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। कुछ कहानियों में, समाजिक न्याय के मुद्दे उठाए गए हैं। ये कहानियाँ विभिन्न विषयों पर सोचने और विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं, जैसे कि न्याय, समानता, और इंसानियत। कुछ कहानियाँ समाज में बदलाव के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ये कहानियाँ समाज के उस विकास और परिवर्तन को दर्शाती हैं जो समाज को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक होता है। 'नासमझ' की कहानियाँ सामाजिक चेतना को उत्तेजित करती हैं और पाठकों को समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए प्रेरित करती हैं।

मुख्य शब्द – चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, नासमझ, कहानियां एवं सामाजिक चेतना ।

प्रस्तावना –

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की 'नासमझ' कहानी संग्रह में कुल छब्बीस कहानियाँ ग्रन्थित हैं। 'जब नीरू नरगिस बनी' कहानी में नीरू नाम की लड़की को फिल्म की हिरोइन बनने का भूत चढ़ता है और इसके लिए वह अपने हम उम्र प्रेमी लड़के के साथ बम्बई भाग जाती है, लेकिन शीघ्र ही उन्हें समाज की सच्चाई का पता लगता है जब उनके सारे पैसे खर्च हो जाते हैं और उन्हें किसी भी प्रकार का कोई छोटे से छोटा काम तक नहीं मिलता। जब तक नीरू के पिता उसे खोजते खोजते मायानगरी बम्बई पहुँचते हैं। तब तक नीरू उस बम्बई में हिरोइन न बनकर कुछ और ही बन जाती है। उदाहरण द्रष्टव्य है– ''दूसरे दिन सुबह–सुबह जब पुलिस का

साथ लेकर गिरगाँव के उस गुजराती ढाबे पर जयंत के साथ नीरू के पिताजी पहुँचे, तो मैनेजर ने कहा, ''वह पेशा कमाने लगी थी। हमने कल शाम ही उसे यहाँ से निकाल दिया। उसी दलाल सरदार टैक्सी वाले के साथ चली गई। अब मण्डी बाजार में जाकर तलाश करो।''[1]

'कवयित्री' कहानी की मध्यम वर्गीय सविता जिनके पति बैंक क्लर्क है, सविता की वहन सुषमा जिनके पति अधिकारी है और उच्चवर्गीय जीवन जीते हैं, एक दिन सविता को पार्टी में बुलाते है जिसमें कवि निहाराजी भी थे, सविता अपने बहनोई के जीवन स्तर को देखकर अपने मन में असंतोष की भावना देखती है एवं अपने घर वापस आती हैं, जहाँ कुछ दिन बाद कवि निहारा जी पहुँचकर सविता को कवयित्री बनाने का सपना दिखाते है एवं उसकी प्रशंसा करते है। लेकिन समय रहते सविता को इस बात का पता लग जाता है कि हर दिखने वाली चीज सोना नहीं होती और वह गलत रास्ते पर जाने से बच जाती है। उदाहरण द्रष्टव्य है – ''जीजी का आदमी आया था, कह रहा था, तुम न जाने कहाँ चली गई हो। मैंने सोचा, जरूर तुम्हें कविजी फुसलाकर ले गए होंगे। मैं रिपोर्ट करने जा रहा था। धत् ! सविता लजा गई और भागकर बैठक में घुस गई। आज उसे अपना दो कमरों का मकान बहुत प्यारा लग रहा था।''[2]

'पूर्व जन्म के पाप' कहानी एक अत्यन्त गरीब मजदूर नत्थू के परिवार की सामाजिक कहानी है, नत्थू के बच्चे की मृत्यु झोपड़पट्टी में 'सूखा रोग' से हो जाती है, नत्थू की बीबी बहुत विलाप करती है और कहती है कि पुलिस वाले ने यदि अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए उसकी झोपड़ पट्टी को तहस–नहस न किया होता तो उसका बच्चा शायद बच जाता क्योंकि झोपड़पट्टी तोड़ने के दौरान उसका तो किलो सरसों का तेल नष्ट हो गया जिसे उसने अपने बच्चे की मालिश के लिए रखा था। जबकि नत्थू सारा दोष पूर्व जन्म के पाप को देता है और कहता है कि यदि पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किये होते तो भगवान हमें पक्की हवेली में जन्म न देता। उदाहरण द्रष्टव्य है– ''तेल में बड़ी ताकत होवे है भइया। टूटी हड्डी तक मालिस से जुड़ जावे है। दो सेर तेल बिखर गया, सोच के ही दुःख लगता है। पर हमें अपनी हैसियत न भूलनी चाहिए। भला सिपाही से हम कहीं लड़ सकते हैं? जो हमारी किस्मत में चैन लिखा होता, तो भगवान हमें पक्की हवेली में जन्म न देता? हम तो मजूर हैं, जन्म भर मेहनत मुसकत करेंगे। तब भी तन पर चिथड़े ही लटकेंगे। हाँ, पिछले जनम में दान–पुन्न किया होता तो, इस जन्म में सुख पाते। नथुआ ने हामी भरी, ''हाँ भइये, ये सब हमारे पूरब जन्मों के पाप हैं और क्या?''[3]

विश्लेषण –

'नासमझ' कहानी की नर्स सविता है, जो सीमा पर सैनिकों की सेवा के लिए जाने वालों में अपना नाम दे देती है। जिससे उनकी माँ बहुत गुस्से में है वह सोचती है एक तो वैसे ही मेरी बेटी कुँवारी है, यदि उसके साथ कोई ऊँच–नीच हो गया तब क्या होगा, वह सविता को सीमा पर सैनिकों की सेवा के लिए जाने से रोकती हैं। जबकि उनकी छोटी बेटी जो कि विवाहित है और उसका पति–पत्नी को मायके में नहीं छोड़ना चाहता, और वह बिना पत्नी की इच्छा की परवाह किये बगैर उससे मात्र एक सेक्स की मशीन समझता है। दोनों बहिनों का वार्तालाप आँखें खोलने वाला है – ''पुलिस की कमाई, गोश्त–शराब का सारा जोश, मेरे ही दुर्बल प्राणों पर उतरता है। सच मानो, जीजी, यही हाल रहा, तो दो–चार वर्षो में तुम्हारी प्रीति सुरधाम पहुँच जाएगी!''[4] अब सविता कहती है, ''यह भी क्या एक प्रकार का बलात्कार नहीं है?––जो भय घर के पुरूष से किया जा सकता है, उसे के लिए बाहर वालों को, इतना दोष देना, मेरी समझ में नहीं आता–अगर विश्वास भंग भी होगा, तो यह संतोष तो रहेगा ही, मैंने अपने देश के लिए लड़ने वाले सैनिक की सेवा कर दी ––। इसे तुम सेवा कहोगी? तू भी तो पति–धर्म के नाते सेवा करने जा रही है। मैं देश धर्म के नाते कर दूँगी।''[5]

'शिकायत' कहानी एक ऐसी महिला पड़ोसी किरायेदार की कहानी है जिसे किसी न किसी बात को लेकर हर समय शिकायत रहती है, कभी घर में तेज धार से पानी न आने की शिकायत, कभी कौओं के द्वारा छत पर सुखाये जा रहे सामान खा जाने की शिकायत, रहती है, कभी घर में नौकर न होने की शिकायत, कभी आफिस की नौकरी न मिलने की शिकायत, कभी स्कूल की नौकरी न मिलने की शिकायत। जबकि उसकी हर शिकायत का समाधान उसे मिल जाता है, उसके अगले दिन कोई नयी शिकायत पुनः पैदा हो जाती है। आखिर में उसकी हर शिकायत दूर करने वाला उससे तौबा कर लेता है।[6]

'नन्दलाल' कहानी एक अविवाहित मध्यम वर्गीय लड़की प्रेमा जो शादी से पहले ही अपने प्रेमी प्रमोद का गर्भ धारण कर लेती है, जिसके कारण उसे अपने परिवार के लोगों के द्वारा मानसिक एवं शारीरिक यातना मिलती है तथा सास–ससुर भी उसे अपनी बहू मानने से इन्कार कर देते हैं, लेकिन ज्यों ही आत्मनिर्भर प्रेमी प्रमाद प्रेमा के बच्चे का अपना बच्चा मान कर उसे अपना लेता है, उसका सारा पाप पुण्य में बदल जाता है एवं घर का सारा वातावरण ही बदल जाता है और सेठ के घर में बधाईयाँ बनजे लगती है। उदाहरण द्रष्टव्य है– ''बच्चा! प्रमोद ने आश्चर्य से दोहराया, बच्चा ! यानी कि मेरी बेवकूफी फलवान हो गयी। पर आप लोग भी बड़े अजीब हैं। मैं तो प्रेमा से कह गया था कि अम्मा–लाला मानें या न मानें मैं उसी से विवाह करूँगा। इसीलिए तो बम्बई में अपना बिजनेस जमाने के चक्कर में छह महीने अटका रहा। यह बात थी तो लाला से पता पूछकर मुझे लिख देते। तुरन्त आ जाता। प्रेमा का पता दे रहा था और पगली बोली, ''न मैं पत्र डालूँगी, न आप, भईया भाभी क्या कहेंगे!''[7]

'सती मुक्ता' कहानी में समाज में व्याप्त सत्य को उजागर किया गया है जहाँ पति पत्नी के रहते हुए आफिस की कर्मचारी से सम्बन्ध बनाये हुए है, पत्नी किसी अन्य से तथा बहन किसी अन्य से। आज के युग में बदलते परिवेश का हमारे समाज पर बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा है। वर्तमान समय की सती का मतलब बदल गया है, अब जो जिसके साथ रहे ईमानदारी से रहे यही उसका सतीत्व है, चाहे वह भावी होने वाला दूसरा पति ही क्यों न हो। सतीत्व और पतिव्रत्य की नई परिभाषा देते हुए 'सती मुक्ता' कहती है– ''भाभी, आप कुलवन्ती हो सकती हैं, पर पतिव्रता नहीं, आपका यह पातिव्रत्य धर्म भैय्या की कमाई से, उन्हीं ही छत्रछाया में सम्मानपूर्वक जीने का टैक्स है। मैं अपनी रोटी स्वयं कमा सकती हूँ, मैं जिससे प्रेम करती हूँ, उसी के प्रति अनुराग दिखाती हूँ। चाहे वह पहला प्यार हो, या दूसरा। मेरी दृष्टि में यही पातिव्रत है।''[8] इस प्रकार कुसुम से 'मुक्ता' तक आने में नारी ने घोर संघर्ष किया है, जहाँ मध्यवर्गीय सतीत्त्व पर वह प्रश्न चिन्ह ही नहीं लगाती, अपितु उसका प्रत्युत्तर भी देती है।

'शाकुंतल आधुनिकम्' कहानी में जमींदार का बेटा महीपति अपनी गरीब प्रेमिका शकुंतला जो कि उसके बच्चे की माँ बनने वाली है अपनाने से इन्कार कर देता हैं। महीपति के माता–पिता महीपति की शादी अन्यत्र कर देते हैं। जिससे उनको कोई सन्तान नहीं होती है। इधर शकुंतला जिस नौकर के साथ अपने प्रेमी को मनाने गयी थी उसे के घर बैठ जाती है और वह धरमू नौकर उसके बच्चे को अपना लेता है और उससे शादी कर उसके बच्चे को पाप से पुण्य में बदल देता है। प्रस्तुत कहानी में निम्न वर्ग और उच्चवर्गीय मनोवृत्तियाँ का जब सामना होता है, तब बिलासी पुरूष को मुँह की खानी पड़ती है।

निःसंतान महीपति वर्षो बाद, अपने नाजायज लड़के को शकुन्तला से, जो अब धरमू की विधवा है, मांगने पहुँचता है, तब उस स्वाभिमानी नारी का तेजस्वी स्वर गूँज उठता है, उदाहरण द्रष्टव्य है– ''वाह बाबू, कभी तेरे बाप के भी लड़का हुआ था? मोहन उसका लड़का है, जिसने तेरा पाप ओढ़कर उसे पुण्य बनाया। अपना रास्ता ले। नही तो अभी डॉक्टर साहब के पास खबर भेज दूँगी।.....आ गया बदमाशी फैलाने...''[9]

'थोक का भाव' कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है, जो दस चीजो का थोक का भाव अपनी जानकारी के लिए लेता है और उन सामानों में मीन–मेख निकालता है जिससे उसे सामान कम रेट में सस्ता मिले तथा अन्त में वह अपने मकसद में कामयाब होता है। साढ़े दिन घण्टे की माथापच्ची एवं मोलभाव करने के बाद आखिर में तीन पैसे अतिरिक्त बचा ही लेता है और वह अपनी इस उपलब्धि पर गर्व महसूस करता है। उदाहरण द्रष्टव्य है–''देखा सारी चीजों के थोक भाव कर लिए और तीन पैसे की बचत भी हो गई। मैं चुप रहा। साढ़े तीन घण्टे घूमकर इतने भाव–ताव के बाद तीन पैसों की बचत के लाभ ने मुझे–लाजवाब कर दिया था।''[10]

'लक्ष्मण–रेखा' कहानी जातिवाद पर व्यंग्य है, मध्यम वर्ग की लड़कियाँ चाहे कुवाँरी रह जाये, लेकिन शादी होगी तो अपनी जाति के लड़के से। जबकि अपनी जाति के लड़के इतना दहेज माँगते है कि वह माँ–बाप के बस का नहीं है। यदि कोई लड़की अपनी पसन्द से अन्य किसी जाति के लड़के से शादी कर ले तो समाज में कोहराम मच जाता है, भले ही वह शादी कितनी ही अच्छी क्यों न हो। हमारे समाज में बहुत कम लोग है जो इस जातिवाद की लक्ष्मण रेखा को लांघने की हिम्मत कर पाते हैं। भले ही सजातीय लड़का खोजने में उनकी लड़की कुँवारी ही क्यों न रह जाये। उदाहरण द्रष्टव्य है–''मिसेज निगम भुनभुनाई! हमारी लौंडिया ही बुद्धू है। चार बरस यूनिवर्सिटी में पढ़ाया, इससे अपने लिए एक ढंग का लड़का न ढूँढा गया। रूपा को देखो कैसी

आराम में है। राम बाबू की उस कलूटी चित्रा ने भी अच्छा खासा वर ढूँढ़ लिया है। हमारी ही किस्मत में परेशानी लिखी है।''[11]

'कंगन' कहानी गरीब विधवा की बेटी शरबती की है, जिसे इस बात का बहुत शौक था कि उसकी शादी में जड़ाऊ कंगन चढ़े भले ही और कोई जेवर न चढ़े। उसका शौक पूरा होता है जब उसकी शादी में जड़ाऊ कंगन चढ़ते हैं। शादी के ठीक बाद भारत चीन का युद्ध हो जाता है जिससे बहुत सारे भारतीय सैनिक मारे जाते हैं, पूरे देश की बहुत सारी माँ–बहिनों के द्वारा देश के राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान दिया जाता है। जिससे हमारे देश के वीर सैनिकों को लड़ने में सहायता मिले, और वे शत्रुओं को भगाकर मेरी–जैसी बहनों के भाई सकुशल घर आएँ। शरबती का पति भी अपनी अगूंठी तथा कुछ रूपये दान में देता है, अन्त में शरबती अपनी इच्छा से अपनी सबसे बहुमूल्य प्रिय चीज जड़ाऊ कंगन देश के सुरक्षा कोष में दान दे देती है। उदाहरण द्रष्टव्य है– ''अरे कंगन कहाँ गए? क्या मेरे डर से मायके भेज दिए। नहीं, शरबती धीरे–से मुसकराई–'सुरक्षा–कोष में दे दिए जी!'' सोने की कमी से देश में हथियार न आ सकें इससे बड़ी लज्जा की बात क्या होगी जी। देश ही न तो गहनों का क्या बनेगा? मोहन ने अविश्वास से पत्नी की ओर ताका–पर हरी चूड़ियों वाली कंगन रहित गोरी–गोरी कलाइयाँ उसे विश्वास दिला रही थीं कि मोर्चे पर लड़के वाले जवानों के पीछे सारा देश है– आक्रामक को मुँह की खानी पड़ेगी।''[12]

'बोद्दा' कहानी की रत्ना अपने पति को बोद्दा सोचती है, पर वही 'बोद्दा' पति अपनी सीमा से बाहर जाते अपने चचेरे भाई को कोई अनिष्ट होने से पहले ही जब क्रोध में उठाकर कमरे से बाहर पटक देता है तब रत्ना के मन का कांटा निकल जाता है और वह पति को पूरे निश्छल मन से समर्पित हो जाती है। उदाहरण द्रष्टव्य है– ''क्यों जी ! तुम तो बड़े वैसे हो। देखने में नाजुक से पर बेचारे लालाजी को गेंद की तरह उछाल दिया! कितनी चोट आ गयी बिचारे को !... अजी गुस्सा थूक दो। तुम्हारे पाँव पड़ूँ। जो अब लालाजी से हँसी करूँ, तो मुझे गंगा माई की ... और आनन्दविभोर वीरेन्द्र के होठों ने नत्नी का वाक्य पूरा न होने दिया।''[13]

पति में एक कठोर पुरूषत्त्व की कामना हर पत्नी करती है। उसके न मिलने पर पति को वह संतुष्टि नहीं कर पाती और मनोनुकूल पर–पुरूष को देखकर, अचेतन में ही सही सराहने लगती है। इसे चाहे दुर्बलता का नाम दें या पतन का, पर यह बहुत ही स्वाभाविक मानवीय प्रतिक्रिया है।

'लॉ मैरिज' कहानी के माध्यम से चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने एक ओर सुनियोजित विवाह के कारण गर्विता नारी और दूसरी ओर विनम्र, आत्मनिर्भर समर्पित किन्तु लांछित मृणाल की तुलना करके, इस प्रकार के विवाह की सामाजिक नियति स्पष्ट करती है। दोनों पत्नियों में, केवल एक समानता है कि दोनों के पति का शराबी होना–'मेरे तो मइया–बाप ही मेरे बैरी थे, जिन्होंने ऐसे शराबी के साथ मेरी गांठ जोड़ी – पर मैं भी आधी हवेली बंटवा लूँगी। ब्याह कर आयी हूँ, कोई भागी हुई थोड़े ही हूँ जो आज ही मेरे गोपाल की डिरस का कपड़ा न आया तो देख लेना चूल्हे पर तवा न चढ़ने दूँगी।''[14] एम.ए. पास बंगाली मृणाल जिसने लॉ मैरिज की हुई है, साइकिल से पढ़ाने जाती है, राशन लाती है, और रात में चुपचाप शराबी पति को उठाकर घर लाती है। उस पर पति की चार बाते सुनती है। मोहल्ले की औरतों का एक ही स्वर है, ''बेचारी मास्टरनी बुरी फँसी है। कमाये भी और धोंस भी सहे। बेचारी काहे की? जैसी करनी वैसी भरनी। इसके मजे भी ते मास्टरनी ने ही लूटे होंगे ! लॉ मैरिज है भइया––।''[15]

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा प्रगतिवादी चेतना की कलाकार हैं। नूतन को ग्रहण करने तथा अनुपयोगी पुरातन को परित्याग करने की उनमें जन्म–जात प्रवृत्ति है। साम्राज्यवादी शासन और शोषण को स्पष्ट करते हुए, सातन्त और जमींदारों की यथार्थ स्थिति का चित्रण इनके कहानियों में हुआ है।

निष्कर्ष: –

निष्कर्षतः चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियाँ सामाजिक चेतना को जागरूक करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक बुराइयों, अन्याय, और असमानता को उजागर करती हैं, जिससे पाठकों को समाज में सुधार के लिए प्रेरित किया जाता है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में सामाजिक अवस्थाओं को उनके व्यक्तिगत अनुभव, गहरी समझ और संवेदनशीलता के साथ पेश किया जाता है। उनकी कहानियाँ विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जैसे कि जातिवाद, लिंग भेदभाव, न्याय, महिला सशक्तिकरण, बाल विवाह, शिक्षा की उपलब्धता और समाज में असमानता। चंद्रकिरण की कहानियों में अक्सर

ऐसे किरदार होते हैं जो सामाजिक बदलाव के लिए लड़ते हैं या उन्हें समर्थन देते हैं। उनकी कहानियों के माध्यम से वे समाज में विचार बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते हैं और लोगों को सामाजिक न्याय और समानता के महत्व को समझाते हैं। इसके अलावा, वे अक्सर अपनी कहानियों के माध्यम से ऐसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को उजागर करते हैं और उन्हें चुनौती देते हैं।

संदर्भ –

[1] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'जब नीरू नरगिस बनी', नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 16
[2] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'कवयित्री' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 16
[3] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'पूर्व जन्म के पास' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 47
[4] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'सती मुक्ता' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 115
[5] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'नासमझ' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 117
[6] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'शिकायत' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 137
[7] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'नन्दलाल' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 178
[8] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'सती मुक्ता' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 62
[9] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'शाकुंतल आधुनिकम्' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 313
[10] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'थोक का भाव' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 87
[11] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'लक्ष्मण–रेखा' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 103
[12] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'कंगन', नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 108
[13] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'बोद्दा' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 161
[14] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'लॉ मैरिज' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 182
[15] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – 'लॉ मैरिज' , नासमझ (कहानी संग्रह), पृष्ठ 189